तुम बच्चों का बैठना बहुत सिम्पल है। कहां भी बैठ सकते हो। चाहे जंगल में बैठो ,पहाड़ी पर बैठो, घर में बैठो, एक कुटिया में बैठो। कहीं भी बैठ सकते हो। ऐसे बैठने से तुम बच्चे ट्रांसफर होते हो। तुम बच्चे जानते हो कि अब हम मनुष्य है। भविष्य के लिए देवता बन रहे हैं। हम कांटों से फूल बन रहे हैं। बागवान भी हैं। माली भी है। सिर्फ एक बाप को याद करने से और 84का चक्र फिराने से तुम यहां बैठे2 भी ट्रांसफर हो रहे हो। यहां बैठो चाहे कहीं भी बैठो। तुम ट्रांसफर होते2 मनुष्य से देवता बनते जाते हो। बुद्धि में एम ऑब्जेक्ट है कि हम यह बन रहे हैं। कुछ भी काम–काज करो ,रोटी पकाओ बुद्धि से सिर्फ बाप को याद करते रहो। बच्चों को यह श्रीमत मिली है। चलते–फिरते सब कुछ करते रहो सिर्फ याद में रहो। बाप की याद से ही वर्सा भी याद आता है। 84का चक्र भी याद आता है। इसमें और क्या तकलीफ है?कुछ भी नहीं। जबकि हम देवता बनते हैं तो कोई भी आसुरी स्वभाव नहीं होना चाहिए। कोई पर क्रोध ना करना, किनको भी दुःख ना देना है। कोई भी फाल्तू बातें कान से सुननी नहीं है। बाकी संसार की झरमुई–झगमुई तो अब बहुत सुनी है। आधा कल्प से यह सुनते2 तुम नीचे ही उतरते आये हो। अब बाप कहते हैं यह झरमुई–झगमुई मत करो। फलानी ऐसी है ,इसमें यह है। कोई भी फाल्तू बातें नहीं करनी है। यह तो जैसे कि अपना समय वेस्ट करना है। तुम्हारा तो यह समय बहुत वैल्युएबल है। पढ़ाई ही से अपना कल्याण है। इससे ही पद पावेंगे। उस पढ़ाई में तो बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इम्तिहान पास करने विलायत में जाना होता है। तुमको तो कोई तकलीफ नहीं देते हैं। बाप आत्माओं को कहते हैं कि मुझ बाप को याद करो। एक–दो को बिठाते हो कि खुद भी बाप की याद में रहे। याद में बैठे2 तुम कांटे से फूल बनते हो। कितनी अच्छी युक्ति है। तो बाप की ही श्रीमत पर चलना चाहिए ना। हर एक की अलग2 बीमारी होती है। तो हर एक के लिए सर्जन है। बड़े2 आदमियों के लिए खास सर्जन होते हैं ना। तुम्हारा सर्जन कौन सा है?भगवान। वो है अविनाशी सर्जन। बाप तुमको कहते हैं कि मैं तुमको आधा कल्प के लिए निरोगी बनाता हूँ। सिर्फ मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। तुम 21जन्म लिए निरोगी बन जावेंगे। यह गांठ बांध देनी चाहिए। याद से ही हम निरोगी बन जावेंगे। फिर 21जन्म लिए कोई भी रोग नहीं होगा। आत्मा तो अविनाशी है। शरीर ही रोगी बनता है। वहां पर आधा कल्प तुम कदाचित रोगी नहीं बनोगे। सिर्फ याद में तत्पर रहो। सर्विस तो बच्चों को करनी ही है। प्रदर्शनी में सर्विस करते2 बच्चों के गले भी घुट जाते हैं। कई बच्चे फिर समझते हैं कि हम सर्विस करते2 ही जावें बाबा के पास। यह भी बहुत अच्छा है सर्विस का तरीका। प्रदर्शनी में भी बच्चों को समझाना है। प्रदर्शनी में पहले2 यही ल.ना. का चित्र दिखाना चाहिए। यह नम्बरवन चित्र है। भारत में आज से 5000वर्ष पहले बरोबर इन ल.ना. का राज्य था। पवित्रता,सुख–शांति सब था ;परंतु भक्तिमार्ग में सतयुग को लाखों वर्ष दे देते हैं। तो कोई भी बात याद कैसे आवे?यह (ल.ना.) फर्स्टक्लास चित्र है। सतयुग में 1250वर्ष इसी डायनैस्टी ने राज्य किया था। आगे तुम भी यह नहीं जानते थे। अब बाप ने बताया है कि तुमने तो सारे विश्व पर राज्य किया था। क्या तुम भूल गये हो? 84जन्म भी तुम्हीं ने लिए हैं। तुम ही सूर्यवंशी थे। पुनर्जन्म तो लेते ही है। 84जन्म तुमने कैसे लिए हैं यह बहुत आसान, साधारण बात है समझाने की। 84जन्म लते हम उतरते आये हैं। अब फिर बाप चढ़ती कला में ले जाते हैं। गाते भी हैं कि चढ़ती कला तेरे भाणे सर्व का भला। फिर शंख आदि बजाते हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि हाय–हाय कार के बाद फिर सदा के लिए जयजयकार होगी। पुरानी दुनियां का विनाश होगा तो हायहायकार होगी। पाकिस्तान में देखो क्या हुआ था। सबके ही मुख से हे राम, हे भगवान ही निकललता था। अब यह विनाश तो बहुत बड़ा है। पीछे फिर जयजयकार होनी है। बेहद का बाप बैठ बेहद के बच्चों को समझाते हैं कि अब इस पुरानी दुनियां का विनाश (होना) है। अब बेहद का बाप बेहद का ज्ञान तुमको सुनाते हैं। हद की बातों की हिस्ट्री–जॉग्राफी तो तुम सुनते

ही आये हो। यह किसी को भी पता नहीं था कि ल.ना. ने राज्य किया था। इनकी हिस्ट्री–जॉग्राफी को कोई भी कुछ भी नहीं जानते हैं। .....अच्छी रीति अभी जानते हो। इतने जन्म राजाई की फिर यह हुआ। इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल नालेज जो कि स्प्रीचुअल बाप स्प्रीचुअल बच्चों को बैठ देते हैं। यहां हम आत्माओं को परमात्मा आप समान बना रहे हैं। टीचर तो जरूर आप समान ही बनावेंगे ना। बाप भी तुमको ज्ञान देकर अपने से भी उंच बनाते हैं। बैरिस्टर ,डॉक्टर, इंजीनियर आदि आप समान बनावेंगे। बाप कहते हैं मैं तुमको अपने से भी उंच डबल सिरताजधारी बनाता हूँ। लाइट का ताज मिलता है याद से। और 84 के चक्र को जानने से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो। फिर उतरते आते हो। अब तुम बच्चों को कर्म,अकर्म,विकर्म की गति भी समझाई है। सतयुग में कर्म ,अकर्म होता है। रावण राज्य में ही कर्म विकर्म होता है। सीढ़ी उतरते आते हैं। कला कम होते2 उतरना ही है। कितने छी2 बन जाते हैं। फिर बाप आकर भक्तों को फल देते हैं। दुनियां में भक्त तो सभी हैं। सतयुग में भक्ति कहां होती नहीं है। भक्ति कल्ट यहां ही है। वहां पर तो ज्ञान की प्रारब्ध होती है। अब तुम जानते हो कि हम बाप से बेहद की प्रारब्ध ले रहे हैं। कोई को भी पहले2 तो इसी चित्र (ल.ना.) पर समझाओ। आज से 5000वर्ष पहले इन (ल.ना.) का राज्य था। विश्व में सुख–शांति,पवित्रता सब था और कोई धर्म नहीं था। इस समय तो अनेक धर्म हैं। वो पहला2 धर्म है नहीं। चक्र लगाकर फिर उस धर्म को आना जरूर है। अब बाप कितने प्यार से बैठ पढ़ाते हैं। कोई बड़ाई की बात नहीं है। पराया राज्य है। अपना सब कुछ गुप्त है। बाबा भी गुप्त ही आया हुआ है। आत्माओं को ही बैठ समझाते हैं। आत्मायें ही सब कुछ करती हैं। शरीर द्वारा पार्ट बजाती हैं। वो अब देहअभिमान में आई हैं। अब बाप कहते हैं कि देही अभिमानी बनो। बाप और कोई जरा भी तकलीफ नहीं देते हैं। सब कुछ गुप्त है। डोज भी गुप्त ही देते हैं ना। वास्तव में गाया जाता है गुप्त दान महापुण्य। दो–चार को पता पड़ा तो उसकी ताकत आधा हो जाती है। बाप कहते हैं तुमको हम गुप्तदान विश्व की बादशाही देते हैं। तुम सब सजनियां अथवा सीतायें हो। नाटक में दिखाते हैं ना कि द्रौपदी पुकारती हैं कि हमको नग्न होने से बचाओ। फिर कृष्ण साड़ियां बढ़ाते रहते हैं ;परंतु उसका अर्थ तो समझते नहीं हैं। अब तुम 21जन्म लिए कब नग्न नहीं होगी। नग्न होने से तुमको बचाते हैं। तो प्रदर्शनी में पहले ही पहले इस चित्र पर समझाओ (ल.ना.)। तुम चाहते हो ना विश्व में शांति हो ;परंतु कब थी। यह किसी की भी बुद्धि में नहीं है। अब तुम जानते हो कि सतयुग में पवित्रता,सुख,शांति सब कुछ था। याद भी करते हैं कि फलाना स्वर्गवास हुआ। समझते कुछ भी नहीं हैं। जिनको जो आता है वो कह देते हैं। अर्थ कुछ नहीं। सब है अनर्थ। जिससे तो तुम नीचे ही गिरते आये हो। यह है ड्रामा। मीठे2 बच्चों की बुद्धि में बात है कि हम 84का चक्र खाते ही रहेंगे। अब बाप आये हैं पतित दुनियां से पावन दुनियां में ले जाने। बाप की याद में रहते हुये ट्रांसफर होते जाते हो। फिर तुम चक्रवर्ती राजा बनोगे। बनाने वाला बाप है। वो ही आते हैं प्योर बनाने। सतयुग में तो बहुत खूबसूरत बन जावेंगे। वहां नैचुरल ब्यूटी रहती है। आजकल तो आर्टीफीशियल श्रृंगार करते रहते हैं। क्या2 फैशन निकलते हैं। कैसे2 ड्रेस पहनते हैं। बाप कहते हैं आजकल तो बहुत पोशीदा (ढके हुये) रहो। आगे मुसलमानों के राज्य में बहुत पोशीदे रहते थे कि कहीं कोई की नजर नहीं पड़े। अभी तो और ही खुला कर दिया है। तो गंदी नजर बहुत लग पड़ती है। जहां–तहां गंदगी लगी हुई है। शास्त्रों में भी झूठी बातें लगा दी हैं। पांडवों,कौरवों ने दाव लगाया। स्त्री का भी दांव लगाते हैं। यह गंदगी शास्त्रों से सीखी है। शास्त्रों में लिख दिया है कि द्रौपदी को पांच पति है। एक तरफ तो पुकारते हैं कि हमको दुःशासन नग्न करता है। उनसे बचाओ। और फिर पांच पति दिखाये हैं। ऐसे तो कहते नहीं हैं कि पांच पतियों से हमको बचाओ। तो बाप बैठ समझाते हैं कि भक्तिमार्ग में क्या2 होता रहता है। बना बनाया खेल है। फिर भी होगा। शास्त्रों में यही बकवाद भी लिखेंगे। आजकल तो सन्यासियों ने भी बकवास करना शुरू कर दिया है।

इनका तो मुंह बंद करवाकर जेल में डलवाना चाहिए। बाप कहते हैं .....। गवर्मेंट में पावर रहती है। ईश्वर अर्थ दान करते हैं तो भी पावर रहती है। यहां तो कोई में भी पावर है नहीं। जिनको जो आया करते रहते हैं। एक सिपाही भी जैसे कि राजा है। झट कोई की भी इज्जत लेने देरी नहीं करते हैं। बहुत गंदे मनुष्य हैं। तुम कितने सौभाग्यशाली हो जो कि खिवैया ने हाथ पकड़ा है। तुम ही कल्प2 निमित्त बनते हो। यह भी तुम्हीं जानते हो कि वो तो धूल पहनते रहते हैं और काला मुंह करते रहते हैं। बाप तुमको गोरा बनाने आये हैं। फिर अगर कोई विकार में जाते हैं तो बाप कहते हैं कि लाहनत है तुमको। काला मुंह कर दिया है। हम तुमको गोरा बनाने आये हैं। तुम काला मुंह करते हो। तो सौना(सौगुना) दंड हो जावेगा। एकदम चकनाचूर हो जाते हैं। बाप कहते हैं अब फिर अच्छी रीति मेहनत करो। पहला2 है देहअभिमान। फिर काम ,क्रोध.....देहअभिमान के बाद ही सब भूत आते हैं। मेहनत करनी है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यह तो कोई कड़वी दवाई नहीं है। सिर्फ कहते हैं कि अपने को आत्माा समझ बाप को याद करो। बाप की याद में तुम कहीं भी जाओ कब भी टांगें थकेंगी नहीं। हल्के हो जावेंगे। याद से बहुत मदद मिलती है। सर्वशक्तिवान बन जाते हो। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनने बाप के पास आये हैं। और कोई तकलीफ नहीं देते हैं। सिर्फ बच्चों को कहते हैं कि हियर नो ईविल..... बाह्यात झरमुई–झगमुई की बातें कभी नहीं सुननी हैं। अच्छी2 बातें सुनने से ही तुम फूल बनते हो। फिर धूतियां क्यों बनते हो?आपस में मिल जाते हैं तो वो ही बातें करने लग पड़ते हैं। शकल से ही पता पड़ जाता है। सर्विस करने वालों के मुख से सदैव रत्न ही निकलेंगे। ज्ञान की बातों के सिवाय बाकी सब है पत्थर मारना। पत्थर नहीं मारते हैं तो जरूर ज्ञान रत्न ही देते हैं। या तो पत्थर मारेंगे या अविनाशी रत्न देंगे। अपनी जांच करनी चाहिए। हम किसी को ज्ञान रत्न नहीं देते हैं तो जरूर पत्थर ही देते हैं। मुख से सदैव ज्ञान रत्न ही निकलने चाहिए। जिनकी वैल्यु ही कथन नहीं कर सकते हैं। बाप आकर तुमको ज्ञान रत्न देते हैं। .....। पत्थर ही लगाते रहते हैं। बाप कहते हैं यह वेद,शास्त्र आदि सब भक्ति की ही सामिग्री है। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। वो ही सर्व की सदगति करते हैं। भक्तिमार्ग में तो सब दुर्गति ही कर देते हैं। बच्चे जानते हैं कि बहुत2 मीठा बाबा है। आधा कल्प से गाते आते थे तुम माता–पिता.....परंतु अर्थ तो कुछ भी नहीं समझते थे। बावलों मिसल सिर्फ गाते ही रहते थे। बाप समझाते हैं कि अब भी जैसे कि मेंढकों की तरह ट्रां2 करते रहते हैं। वो तो मेढक फिर महफिल बनाते हैं। यह तो एक/दो को पत्थर ही मारते रहते हैं। इसलिए ही बाबा कहते हैं कि भक्तिमार्ग की ईविल बातें नहीं सुनो। ना देखो। हम विश्व के मालिक बन रहे हैं तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बाबा हमको बेहद का वर्सा ,विश्व की बादशाही देते हैं। 5000वर्ष पहले ही हम विश्व के मालिक थे। अब नहीं हैं। फिर बनेंगे। शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा वर्सा देते हैं। ब्राह्मण कुल तो चाहिए ना। भागीरथ कहने से भी समझ नहीं सकते। इसलिए ब्रह्मा और उनका ही फिर कुल है। ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं। इसलिए ही उनको भागीरथ कहा जाता है। जिससे ही फिर बहुत ब्राह्मण बनते हैं। ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा हमको विश्व की बादशाही दे रहे हैं। ब्राह्मण है चोटी। विराट (रूप) भी ऐसा होता है। उपर में शिवबाबा। फिर संगमयुगी ब्राह्मण जो कि ईश्वरीय संतान बनते हैं। तुम जानते हो कि अभी हम ईश्वरीय संतान हैं। फिर हम दैवी सन्तान बनेंगे। तो डिग्री कम हो जावेगी। यह (ल.ना.) भी डिग्री कम है ; क्योंकि इनमें ज्ञान नहीं है। ज्ञान ब्राह्मणों में है। ज्ञान बिगर मनुष्य को क्या कहेंगे?अज्ञानी। इनको (ल.ना.) को अज्ञानी नहीं कहेंगे। इन्होंने ज्ञान ही से यह पद पाया है। तुम ब्राह्मण कितने उंच हो। फिर देवता बनते हो तो कुछ भी ज्ञान नहीं रहता है। अगर उनमें भी ज्ञान होता तो दैवी वंश से ही चला आता। अच्छा, अब बच्चों से बापदादा विदाई ले रहे हैं। गुडमार्निंग।